संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि श्री. साताप्पा लहू चव्हाण का **"शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित स्वाधीन भारतीय समाज"** लघु शोध-प्रबंध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

अध्यक्ष,
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर,
कोल्हापुर - 416 004.

कोल्हापुर

दिनांक : 11/ 1 /2000

डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण,
एम्.ए.,बी.एड्.,पीएच्.डी.
अधिव्याख्याता (वरिष्ठ श्रेणी)
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर,
कोल्हापुर - 416 004.

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री. साताप्पा लहू चव्हाण ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए **"शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित स्वाधीन भारतीय समाज"** लघु शोध-प्रबंध मेरे निर्देशन में पूरे परिश्रम के साथ लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। पूर्वयोजना के अनुसार संपन्न इस कार्य में शोधार्थी ने मेरे सुझावों का आद्यंत पालन किया है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध मे प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट होकर ही इसे परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की अनुमति प्रदान करता हूँ।

शोध-निर्देशक

(डॉ. अर्जुन गणपति चव्हाण)

कोल्हापुर

दिनांक :11/01/2000

प्रख्यापन

"शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित स्वाधीन भारतीय समाज" लघु शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

शोध-छात्र

(श्री.साताप्पा लहू चव्हाण)

कोल्हापुर

दिनांक :11/01/2000

शिवप्रसाद सिंह

प्राक्कथन

प्राक्कथन

28 सितंबर, 1998 की रात को मैं दूरदर्शन पर समाचार देख रहा था ... समाचार था ... हिंदी के प्रबुद्ध चिंतक एवं सशक्त कथाकार डॉ. शिवप्रसाद सिंह का वाराणसी में निधन ... । दूरदर्शन पर इस समाचार के साथ शिवप्रसाद सिंह का चित्र भी दिखाया गया। हाल ही में मैंने शिवप्रसाद सिंह का 'कर्मनाशा की हार' कहानी संग्रह पढा था। कहानी संग्रह पढने के बाद स्वाधीन भारत का चित्र मेरे सामने आया था। शिवप्रसाद सिंह के निधन का समाचार ... वे कहानियाँ ... मैं खो गया ।

दूसरे दिन विश्वविद्यालय में आते ही मेरे पूजनीय गुरुवर्य डॉ. अर्जुनजी चव्हाण के मुँह से बात निकली - "कल शिवप्रसाद सिंह जी गुजर गए" गुरुवर्य चव्हाण जी मेरे साथ करीब एक घंटे तक शिवप्रसाद सिंह और उनके साहित्य पर बोलते रहें। कहानी विधा शुरु से मेरी रुचि का विषय है। इससे आप भली भाँति परिचित थे अत: आपने शिवप्रसाद की कहानियाँ पढने का सुझाव दिया। बाद में मैंने शिवप्रसाद सिंह की महत्त्वपूर्ण कहानियों का अध्ययन किया और आपसे मिल कर चर्चा की। तदुपरांत लघु शोध-प्रबंध के विषय के रूप में "शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में चित्रित स्वाधीन भारतीय समाज" विषय का चयन हुआ। इस लघु शोध-प्रबंध के लिए पूजनीय गुरुवर्य डॉ. अर्जुन जी चव्हाण का मार्गदर्शन के रूप में उपलब्ध होना मेरे लिए सौभाग्य की बात कहनी होगी जिससे मेरे शोध-संकल्प का इन पृष्ठों पर साकार होना सरलता से संभव हुआ। अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे सामने निम्नांकित प्रश्न खडे हुए थे -

1. शिवप्रसाद सिंह का जीवन और व्यक्तित्व कैसा रहा है?
2. क्या शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में स्वाधीन भारत का संपूर्ण प्रतिबिंब दिखाई देता है?

3. शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में स्वाधीन भारत के ग्रामीण समाज का चित्रण कैसे किया गया है?

4. शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में स्वाधीन भारत की कौन-कौन-सी समस्याओं का चित्रण हुआ है?

5. शिवप्रसाद सिंह ने समाज के किस वर्ग का चित्रण प्रभावी ढंग से किया है?

6. शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में कौन-कौन-सी विशेषताएँ मौजूद हैं?

विवेच्य कहानियों के अध्ययन के बाद मुझे उपर्युक्त प्रश्नों के जो उत्तर प्राप्त हुए उन्हें उपसंहार में लिख दिया है। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघु शोध-प्रबंध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित कर प्रस्तुत विषय का विवेचन किया है -

प्रथम अध्याय का शीर्षक है,-"शिवप्रसाद सिंह : व्यक्ति एवं कृति परिचय" । इस अध्याय के अंतर्गत मैंने शिवप्रसाद सिंह के जीवन एवं साहित्य का संक्षिप्त परिचय दिया है। इसमें उनके जन्म, माता-पिता, परिवार, बचपन, शिक्षा-दीक्षा, नौकरी, मृत्यु आदि बातों का विवेचन किया है तथा उनके व्यक्तित्व की विशेषताओं को स्पष्ट किया है। शिवप्रसाद सिंह के साहित्यिक कृतियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी है। अध्याय के अंत में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष दिए हैं।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है, "स्वाधीन भारतीय समाज और विवेच्य कहानी साहित्य", इस अध्याय के अंतर्गत स्वाधीन भारतीय समाज के अध्ययन के साथ-साथ विवेच्य कहानियों में चित्रित स्वाधीन भारतीय समाज का विवेचन किया है। इसमें विवेच्य युगीन सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक,

धार्मिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं।

तृतीय अध्याय का शीर्षक है, "विवेच्य कहानियों में चित्रित स्वाधीन भारत का ग्रामीण समाज", इस अध्याय के अंतर्गत स्वाधीन भारत के ग्रामीण समाज के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक जीवन का विवेचन किया है। विवेच्य कहानियों में शहरी समाज लगभग नहीं के बराबर है। विवेच्य कहानियों में चित्रित स्वाधीन भारत के ग्रामीण समाज का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं।

चतुर्थ अध्याय का शीर्षक है, "विवेच्य कहानियों में चित्रित स्वाधीन भारत की समस्याएँ", इस अध्याय के अंतर्गत विवेच्य कहानियों में स्थित स्वाधीन भारत की सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षिक एवं शोषण जैसी समस्याओं का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिए हैं।

पंचम अध्याय का शीर्षक है, "विवेच्य कहानियों की विशेषताएँ", इस अध्याय में शिवप्रसाद सिंह की कहानियों में प्राप्त चरित्र प्रधानता, अंधविश्वास एवं रुढि परंपरा, संवेदनशीलता, मानवी मूल्यों के प्रति आदर, यथार्थ का चित्रण, ग्रामीण जीवन के चित्रण की प्रधानता, काव्यात्मकता, भाषागत विशिष्टता आदि विशेषताओं का विवेचन किया है। अध्याय के अंत में प्राप्त तथ्यों के आधार पर निष्कर्ष दिया है।

अंत में उपसंहार के रुप में इस लघु शोध-प्रबंध का सार रुप दिया है। इस में पूर्व विवेचित अध्यायों के प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गए निष्कर्ष दिए हैं। तत्पश्चात संदर्भ ग्रंथ सूची है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की पूर्ति में मेरी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहायता करनेवाले हितचिंतकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परत कर्तव्य मानता हूँ ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध पूजनीय गुरुवर्य डॉ. अर्जुनजी चव्हाण, हिंदी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के आत्मीय, प्रेरक, छात्रप्रिय एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के निर्देशन का फल है। अपने कार्य में व्यस्त रहने के बावजूद भी समय-समय पर आपने मेरे लेखन की त्रुटियों को दूर कर तत्परता और आत्मीयता के साथ मौलिक और सही दिशा में मार्गदर्शन किया है। आपके प्रति शब्दों में कृतज्ञता प्रकट करना असंभव है। बस, ईश्वर के पास यही कामना करुँगा कि आपके प्रति मेरे हृदय में बसी कृतज्ञता की भावना बरकरार रहें और भविष्य में भी आप के आशीर्वाद और मार्गदर्शन का अधिकारी बनने की क्षमता प्राप्त हो।

खुद अनपढ होते हुए भी मुझे शिक्षा क्षेत्र में भेजनेवाले, मेरे लिए अनंत कष्ट उठानेवाले मेरे आदर्शवादी माता-पिता का आशीर्वाद मुझे नित्य सत्कर्म की प्रेरणा देता रहा है। अत: मैं आजन्म उनके ऋण में रहूँगा। खेती-वाडी का काम कुशलता से संभालकर मुझे "तुम आगे बढो !" कहकर प्रोत्साहित करनेवाले अपने भाई संजय के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ।

शिवाजी विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. वसंत मोरेजी तथा विभागाध्यक्ष डॉ. पांडुरंग पाटीलजी से मुझे प्रस्तुत अध्ययन में प्रतिपल प्रोत्साहन मिला। अत: आपका आभार किन शब्दों में प्रकट करूँ?

आदरणीय गुरुवर्य डॉ. रमेश जाधव जी, डॉ. सुनीलकुमार लवटे जी, प्राचार्य डी.ए. पाटील जी, डॉ. सुभाष के. देसाई जी, डॉ. यादवराव धुमाळ जी, श्री. सुकांत हिरेमठ जी, शिवाजी विश्वविद्यालय एन्.एस्.एस्. प्रमुख सुधीर इंगळे जी का आशीर्वाद और प्रेम मेरे साथ रहा है। इन सब के प्रति मैं सविनय आभार प्रकट करता हूँ। नवचेतना साहित्य प्रतिष्ठान, विवेकानंद कला, क्रीडा, सांस्कृतिक व शैक्षिक विकास असोसिएशन (गणेशवाडी), युवा कला मंच (कोल्हापुर), ए.एस्.प्रकाशन संस्था (कोल्हापुर) के सभी सदस्य और दै. लोकमत परिवार के दशरथ पारेकर जी, विजय जाधव जी, महादेव कुंभार जी, राजेंद्र फडके जी आदि सदस्यों ने लेखन क्षेत्र में मुझे प्रोत्साहित किया है। अत: मैं इन सब के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

श्री. राजेंद्र स्वामी जी, श्री. संजय स्वामी जी, जीवन नर्सिंग होम के संचालक डॉ. प्रकाश पाटील जी, श्री. दत्तात्रय पाटील जी, श्री. महेश ओसवाल जी आदि महान हस्तियों ने मेरी आर्थिक परिस्थिति को देखकर इस लघु शोध-प्रबंध की छपाई के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान किया इसलिए मैं उनका आजन्म ऋणी रहूँगा। मेरे हितचिंतक श्री. संपत झाडे, श्री. प्रकाश गुरव, श्री. प्रकाश चिकुर्डेकर, श्री. मारुती झाडे, श्री. विश्वास पाटील, श्री. प्रमोद खांडके, श्री. प्रविण हावळ, श्री. उदय सुर्वे, श्री. कुबेर शेडबाळे, श्री. हनुमंत शेवाळे, श्री. मनोहर भंडारे, श्री. गिरीश काशीद, श्री. अशोक बाचुळकर आदि का भी इस लघु शोध-प्रबंध के कार्य की पूर्ति में सहयोग प्राप्त हुआ है। अत: इन सभी का मैं हृदय से आभारी हूँ।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए आवश्यक संदर्भ ग्रंथों की प्राप्ति मुझे बैरिस्टर बाबासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय कोल्हापुर, करवीर नगर वाचन मंदिर कोल्हापुर, न्यू कॉलेज कोल्हापुर, विवेकानंद कॉलेज कोल्हापुर, राजाराम कॉलेज कोल्हापुर और महावीर कॉलेज कोल्हापुर से हुई। अत: इन ग्रंथालयों के सभी कर्मचारियों का मैं ऋणी हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध को आकर्षक एवं यथोचित रूप में टंकन करके अक्षर टायपिंग के संचालक गिरीधर सावंत और श्रीमती पल्लवी सावंत का भी मैं आभारी हूँ। साथ ही जिन ज्ञात-अज्ञातों की शुभकामनाएँ मुझे प्राप्त हुई उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए मैं इस लघु शोध-प्रबंध को अत्यंत विनम्रता से विद्वानों के सामने परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोध छात्र

कोल्हापुर.

दिनांक :11 /01/2000

(श्री. साताप्पा लहू चव्हाण)

❑❑❑